2016-17

21 वीं शती का हिंदी साहित्य : नव विमर्श

संपादक

डॉ. एस. वाय. होनगेकर, डॉ. आरिफ़ महात

सह संपादक : विश्वनाथ सुतार

21 वीं शती का हिंदी साहित्य : नव विमर्श

संपादक

डॉ. एस. वाय. होनगेकर

डॉ. आरिफ़ महात

सह संपादक

विश्वनाथ सुतार

ए. बी. एस. पब्लिकेशन

वाराणसी-221 007

प्रकाशक
ए.बी.एस. पब्लिकेशन
आशापुर, सारनाथ
वाराणसी-221 007 (उ० प्र०)
मो०: 09450540654, 09415447276

ISBN : 978-93-86077-64-6

© संपादकाधीन

प्रथम संस्करण : 2018

मूल्य : 950.00 (नौ सौ पचास रुपये मात्र)

शब्द-संयोजन : विष्णु ग्राफिक्स

मुद्रक : पूजा प्रिण्टर्स
बसंत विहार, नौबस्ता

IKKISAVI SHATI KA HINDI SAHITYA : NAV VIMARSH

By Ed. Dr. S. Y. Hongekar, Dr. Arif Mahat

Co. Ed.Dr. Vishvanath Sutar

Price : Rs. Nine Hundred Fifty Only

9. 21 वी सदी के हिंदी साहित्य में : किसान विमर्श 131–134
प्रा.डॉ.बुक्तरे मिलिंदराज

10. 21 वी सदी के हिन्दी साहित्य में नव विमर्श
विविध आयाम – किसान विमर्श 135–139
डॉ. महादेवी गुरव

11. कृषक विमर्श 140–144
नरेश कुमार सिहाग

12. किसान विमर्श के परिप्रेक्ष्य में मिथिलेश्वर
का कथासाहित्य 145–147
डॉ. श्रीकांत पाटील

13. प्रा. संजीव के फॉस उपन्यास में चित्रित किसान 148–151
निलेश जाधव, प्रा. वाय. एस. गायकवाड

14. मैत्रेयी पुष्पा की आत्मकथा 'कस्तूरी कुंण्डल बसै'
में चित्रित किसान विमर्श 152–156
डॉ. मीनाक्षी विनायक कुरणे

15. बहुराष्ट्रीय कम्पनियों और सरकार के चक्रव्यूह
में फँसा किसान' 157–161
प्रदीप कुमार

16. किसान विमर्श के परिप्रेक्ष्य में गोदान की प्रासंगिकता 162–164
डॉ. दस्तगीर पठाण

17. भारतीय किसान : एक विमर्श 165–170
प्रा. रमेश आण्णाप्पा आंदोजी

18. मिथीलेश्वर की कहानियों मे किसान विमर्श 171–173
प्रा. डॉ.संजय चिंदगे

19. संजीव के 'फाँस' उपन्यास में 'किसान विमर्श' 174–177
कु. सफिया मुल्ला

20. "अंतहीन बनती समस्याओं के विरूद्ध
किसानों के संघर्ष की विजयगाथा" 178–180
लेफ्टनंट डॉ.रविंद्र पाटील

20

''अंतहीन बनती समस्याओं के विरुद्ध किसानों के संघर्ष की विजयगाथा''

('यह अंत नहीं' और 'माटी कहे कुम्हार से' के संदर्भ में)

भारत मूलतः कृषि प्रधान देश है। देश की अधिकांश जनता कृषि पर निर्भर हैं। भारत में अर्थाजन का प्रमुख साधन कृषि है। परंतु इसमें भी अधिकांश जमीन बडे–बडे जमींदारों के कब्जे में हैं। इसी के परिणाम के चलते खेती, जमींदार और छोटे–छोटे किसानों में बट गयी । बात आजादी के पहले की हो या आजादी के बाद की हो किसान, जमीनदार और सरकार के बीच संघर्ष निरंतर होता आ रहा है। इस संघर्ष का चित्रण साहित्यकारों ने साहित्य में बखुबी से किया है। किसानों के वास्तविक जीवन की सच्ची तस्वीर को प्रस्तुत किया है। किसानों की समस्या साठोत्तरी की हो या इक्कीसवीं सदी की, समस्याएँ वहीं के वहीं रह गयी हैं। जहाँ जमींदार वर्ग मालामाल हुआ है, वहीं गरिब किसानों स्थिति सोचनीय बनी हुई है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद जमींदारी उन्मूलन कानून पारित तो हुआ लेकिन भारतीय कानून की ढील ढालवाली प्रवृत्ति और जमींदारों की धूर्तता की वजह से जमींदारी उन्मूलन कानून पूर्णरूप से सफल नहीं हो सकता ''कृषि भूमि के आधार पर अँचलों में जमींदार, किसान और मजदूर जैसे तीन वर्ग होत हैं।''[1] इसमें जमीदार वर्ग की आर्थिक स्थिति मजबूत होने के कारण अधिकांश जमीदार धन और आतंक के बलपर किसान और खेतों में काम करनेवाले मजदूरों का अधिक मात्रा में शोषण करते हैं। खेती में खून पसीना एक करके मेहनत करनेवाला किसान वहीं का वही है। जमींदार, सरकार और अधिकारी वर्ग के मिली भगत के कारण भारत का किसान अनेक योजनाओं से वंचित दिखाई देता है। इसके संदर्भ में डॉ. वी.पी.चौहान लिखते है ''कृषक और मजदूर वर्ग तो अपना खून–पसीना वहाकर भी भूख से बिलबिलाता रहा हैं तथा कई तरह के आर्थिक दबाओं की यंत्रणा झेलता रहा है। जमींदारों और महाजनों की शोषणवृत्ति का शिकार..... दरिद्रता की चक्की में पीसता रहा है।''[2]

इक्कीसवी सदी के शुरूवाती चरण के साहित्यकारों में मिथिलेश्वर का नाम सम्मान के साथ लिया जाता है। ग्राम जीवन उनके साहित्य का प्रमुख अंग है। उनके साहित्य में कृषक वर्ग के प्रति सहानुभूति दिखाई देती है। उनके साहित्य में चित्रित किसान जमीदारों राजनेताओं एवं भ्रष्ट अधिकारियों से त्रस्त है। परिस्थिति बेकाबु होने पर वह विद्रोह भी करता है। 'यह अंत नही' मिथिलेश्वर जी का क्रम की दृष्टि से चौथा उपन्यास है। इस उपन्यास में ग्राम जीवन की यथार्थता चित्रित है। इसमें अंतहीन बनती समस्याओं के विरूद्ध किसानों के संघर्ष की विजयगाथा चित्रित है। विवेच्य उपन्यास में हरिचरण नाम का किसान जमीदार के यहाँ जोतदार का काम करता है। उस गाँव के जमींदार इंद्रासन श्रीवास्तव उसे मनी के रूप में एक खेत जोतने के लिए देते हैं। हरिचरण सालभर कडी मेहनत करता है, परंतु अच्छा फसल नहीं निकाल पाता। जमींदार को उचित मनी नहीं दे पाता। इसी के परिणाम के चलते जमींदार श्रीवास्तव अपना खेत वापस लेना चाहता है, परंतु हरिचरण खेत वापस देने के लिए तैयार नहीं होता वह जमींदार के निर्णय का कडा विरोध करता है।

जमीदार इंद्रासन हरिचरण से कहते हैं, "ठीक है हरिचरण इस बार मनी न देने का चाहे तुम जो भी बहाना बनालो पर भूलकर भी अब मेरे खेतों पर न जाना......। एक ही माघ से जादा नहीं कर जाता.......। अब मैं तुम्हें खेत नहीं दे सकता.......। मेरे उन खेतों के लिए अनेक मनीदार मुँह बाए खेद है....।" अब तेरे साथ मनीदार और खेती मालिक का मेरा नाता समाप्त.......।"[3] अतः यहाँ पर किसान जमींदार इंद्रासन श्रीवास्तव और हरिचरण के बीच संघर्ष दिखायी देता है। हरिचरण जमींदार श्रीवास्तव के निर्णय का कडा विरोध करता है। 'माटी कहे कुम्हार से' उपन्यास में चित्रित बजरंगपुर गाँव के जमीनदार नंदकिशोर अपने पुरखों की की जमीन जगतराम को जोतने के लिए देता है। बाद में दोनों के संबंध बिगड जाते हैं। परिणामस्वरूप जमीदार जगतराम से खेत वापस लेता है। जगतराम इसका कडा विरोध करता है। "अब हम स्वयं खेती करेंगे जगत, इसीलिए रब्बी के कटाई के बाद फिर कुछ मत रोपना.........। जब तक हमें संभव नहीं था, तुम्हारे जिम्मे खेत लगा दिए थे। अब हमने खुद खेती का निर्णय किया है......।"[4]

अतः निष्कर्षतः कह सकते है कि बात आजादी के पहले की हो या आजादी के बाद की हो किसान जमींदार और सरकार के बीच संघर्ष निरंतर होता आ रहा है। यह संघर्ष साहित्य का अंग भी बना है। इक्कीसवीं सदी मे भी किसानों की समस्याएँ वही के वहीं है। जमींदार धन और आतंक के बल पर किसान और मजदूरों का शोषण करते हुए दिखाई देते हैं। ग्राम जीवन मिथिलेश्वर के कथा साहित्य का प्रमुख अंग है। विवेच्य उपन्यासों में किसानों के प्रति ... अंत नहीं' का हरिचरण हो या। 'माटी

कहे कुम्हार से' उपन्यास का जगतराम हो दोनों किसान समय आने पर अपने जमींदारों के विरूद्ध विद्रोह कर उठते हैं। अपने अधिकारों की माँग करते हैं।

संदर्भ

1. डॉ. अष्टिणी पी. एम. : 'आँचलिक उपन्यासः एकता की खोज' पृष्ठ, 40 जवाहर पुस्तकालय, मथुरा प्र. सं. 1993
2. डॉ. वी. पी. चौहान, 'रामदरश मिश्र' के कथा साहित्य में ग्राम्य जीवन, पृष्ठ, 168 चिंतन प्रकाशन, कानपुर, प्र. सं. 2004
3. मिथिलेश्वर, 'यह अंत नहीं', पृष्ठ, 252 किताब घर प्रकाशन, नई दिल्ली, 2003.
4. मिथिलेश्वर, 'माटी कहे कुम्हार से', पृष्ठ, 266 भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र. सं. 2006.

लेफ्टनंट डॉ. रविंद्र पाटील
राजर्षि छत्रपति शाहू कॉलेज,
कोल्हापुर
मो. नं. 9552564248